* श्रीः *

श्रीमदमृतग्रन्थमालायाः (७)

सप्तमं पुष्पम् ।

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र—

महामहिम-आचार्य—

श्रीमदमृतवाग्भवप्रणीता

सिद्धमहामन्त्रस्वरूपिणी

श्रीपरशिवप्रार्थना

राष्ट्रभाषानुवादसहिता

सिद्धमन्त्रत्वप्राप्तीतिहाससहिता

प्रथमं संस्करणम्] वि० सं० २०३१ [अमूल्यम्

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

॥ श्रीः ॥

प्रकाशक :

राजपण्डित श्रीगोविन्दमिश्र

(अध्यक्ष-श्रीस्वाध्याय सदन, सोलन)

चौबुर्जा भरतपुर (राजस्थान)

•

इस 'श्रीपरशिवप्रार्थना' के संमुद्रण का सम्पूर्ण
आर्थिक व्यय श्री छोटेलाल बी. ए.
प्रभाकर, 'पराग' (भरतपुर)
ने किया है । अतः
उनको शतशः
धन्यवाद ।

निवेदक—
गोविन्द मिश्र

अमृतनिभृतशास्त्रं साधु मुद्रापयित्वा
प्रथयति विबुधानां लब्धुकामः प्रसादम् ।
अमलमतिप्रसादीलालपुत्रोऽत्रिगोत्रो
भरतपुरनिवासी मिश्रगोविन्दशर्मा ॥

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

श्री १०८ मान् आचार्य अमृतवाग्भवजी

यह चित्र संवत् १९९० का है

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

मन्निर्मितः प्रभोशम्भोश्लोको यत्सदयेच्छया ।
इष्टसिद्ध्यै प्राप सिद्धमहामन्त्रस्वरूपताम् ॥ १ ॥

हितायाऽऽस्तिकलोकानां वर्णयामि समासतः ।
नत्वा तत्पादयुगलं तद्वृत्तं विस्मयावहम् ॥ २ ॥

सायन्तनं नित्यकृत्यं समाप्य समवस्थिते ।
स्वासने मय्यन्धकारावृते पूजागृहेऽमले ॥ ३ ॥

श्रीशिवप्रार्थनापद्ये प्रातरेव स्वनिर्मिते ।
श्रपशब्दं चिन्तयति सहसा दिव्यदेहवान् ॥ ४ ॥

जीर्णांशुकं जानुदघ्नं वसानो लम्बमेकतः ।
रोमगुच्छाचितबिलमहाश्रोत्रः शशिप्रभः ॥ ५ ॥

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

बर्बरप्रभरोमालिव्याप्तसर्वाङ्गविग्रहः ।
तिरस्कृततडिच्चञ्चत्कनीनिकविलोचनः ॥ ६ ॥

महात्मा प्रकटीभूय कोऽपि मत्सम्मुखं तदा ।
उच्चालयन् तर्जनीं स्वां मामुवाच सगर्जनम् ॥ ७ ॥

पद्यमेतन्नास्त्यशुद्धं न कार्यं परिवर्तनम् ।
एवं समासे सुमते ! कामशुद्धिं विशङ्कसे ॥ ८ ॥

इत्युक्त्वा यो दयार्द्रेण चक्षुषा वीक्ष्य मां पुनः ।
शम्पेव क्वाप्यगात् सद्य आश्रित्याऽलक्षितां गतिम् ॥९॥

अजानन्नपि तस्याऽहं नामधामादिकं मुहुः ।
प्रणमामि सदा भक्त्या रूपं वाक्यं च संस्मरन् ॥१०॥

नालागढे धर्मसभाभवने मासि माधवे ।
वृत्तं वृत्तं वैक्रमेब्दे ऋद्धिधैर्यमिते गते ॥११॥

आचार्य-अमृतवाग्भव

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

❀ श्रीः ❀

हिन्दीभाषानुवादः

मेरा बनाया 'प्रभो! शम्भो!' श्लोक जिसकी दयामयी इच्छा से स्वेष्ट-सिद्धि के लिये सिद्धमहामन्त्रस्वरूप हो गया उसका आश्चर्यजनक बृत्तान्त उनके चरणों को प्रणाम करके आस्तिक लोगों के हित के लिये संक्षेप से यहाँ मैं वर्णित कर रहा हूँ ॥१,२॥

सायंकाल का नित्य-कृत्य समाप्त कर अपने निर्मल पूजा-गृह में जहाँ अन्धकार भरा हुआ था अपने आसन पर बैठा हुआ था उसी दिन प्रातःकाल ही अपने बनाये श्री शिव की प्रार्थना-श्लोक ('प्रभो ! शम्भो!) में गलती को सोच रहा था, इतने में ही अकस्मात् एक दिव्य शरीरधारी घुटनों तक पुराना कपड़ा एक छोर नीचे लटकते हुये पहने हुये रोओं के गुच्छों से भरे हुये छिद्र वाले बड़े बड़े कान जिनके थे ऐसे पुरुष प्रकट हुये उनका वर्ण पूर्ण चन्द्रमा की तरह चमकीला था उनके सम्पूर्ण शरीर में घुँघराले बाल भरे थे और आँखों की पुतलियाँ बिजली की चमक से भी अधिक चमकीली थीं ऐसे वे अज्ञात कोई महापुरुष मेरे सम्मुख प्रकट होकर अपनी तर्जनी उंगली को ऊँची उठाकर घुमाते हुये और बड़ी गर्जना के साथ मुझसे कहने लगे ॥३ से ७॥

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

यह श्लोक अशुद्ध नहीं है उसमें कोई इधर उधर परिवर्तन नहीं करना तुम तो बुद्धिमान हो ऐसा समास करने पर ('बद्धादरकरं') कौनसी अशुद्धि की तुमको शंका हो रही है। इस तरह कहकर दयार्द्र-दृष्टि से एक बार मुझे फिर देखा और बिजली की तरह अदृश्य गति से वे कहीं चले गये, अदृश्य हो गये ।।८ तथा ९।।

उनका नाम और उनका स्थान कुछ भी मैं नहीं जानता फिर भी बारम्बार श्रद्धा से उनके आदेश को और उनके स्वरूप को स्मरण करता हुआ उनको प्रणाम करता रहता हूं। यह घटना विक्रम संवत् १९९० वैशाख मास की है और मैं उस समय नालागढ़ (हिमाचल प्रदेश) धर्म सभा भवन में था ।।१० एवं ११।।

[यह महामन्त्र कई लाख की संख्या में मुद्रित हो चुका है और लाखों लोगों ने इससे लाभ उठाया है जैसे-परीक्षाओं में अच्छी श्रेणियों में उत्तीर्ण होना, मानसिक शान्ति, रोगनिवृत्ति, आर्थिक परिस्थिति का सुधार आदि। पचासों पुरुषों ने अपनी इच्छानुसार मुद्रित कर इसे प्रकाशित किया है। सीमाप्रान्त के एक ब्रह्मचारीजी ने तो मन्त्र का अनुवाद अपनी ओर से करके काबुल, कंधार आदि प्रान्तों में भी बट-वाया था। संस्कृत श्लोकबद्ध इतिहास का यह पहिला ही संस्करण है और यह प्रार्थना-प्रणेता श्री आचार्यजी की रचना उनकी इच्छा से ही हम प्रकाशित कर रहे हैं।]

—छोटेलाल बी.ए. प्रभाकर, "पराग"

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

प्रभो ! शम्भो ! दीनं
विहितशरणं त्वच्चरणयो-
र्भवारण्यादस्माद्विषम-
विषयाशीविषवृतात् ।
समुद्धृत्य श्रद्धा-
विधुरमपि बद्धादरकरं
दयादृष्ट्या पश्यन्निज-
तनयमात्मीकुरु शिव

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

PRABHŌ SHAMBHŌ DEENAM,
VIHITASHARANAṂ TWACHCHARANAYŌR,
BHAVĀRAṈYADASMĀD
VIṢHAMAVISHAYĀSHEEVIṢHAVRITĀT.
SAMUDDHRITYA SHRADDHĀ
VIDHURAMAPI BADDHĀDARAKARAM,
DAYADRIṢHTYĀ PASHYAN NIJA
TANAYAMĀTMEEKURU SHIVA !

अर्थ—

हे सर्वशक्तिमान् ! समस्त संसार का कल्याण करने वाले
अनुवा... रूप शिव भगवान् ! आपके चरणों में दीन भाव से
...ये मुझको विषयरूपी भयङ्कर विषधर सर्पों से भरे हुये
...ाररूपी जंगल से बाहर 'निकाल' कर अपनी दयादृष्टि
हुये अपने पुत्र को अपना आत्मीय बनाओ। यद्यपि
...दि का मुझे ज्ञान नहीं है, तथापि चारों ओर से भय-
होकर हाथ जोड़े हुये शरण में आया हूं। अतः इस दीन
को हे शिव ! अपने आप स्वीकार करो। ॥१॥

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

श्री पञ्चस्तवी

द्वितीय संस्करण प्रस्तुत है। यह प्रथम लघुस्तवकी ६०० वर्ष से भी अधिक प्राचीन संस्कृत टीका तथा राष्ट्रभाषानुवाद के साथ मुद्रित है। शेष चार स्तोत्र मूलमात्र हैं। साथ ही इस संस्करण में 'श्रीमहानुभवशक्तिस्तव' भी दिया गया है। कागज और छपाई बहुत उत्तम है। डाक-व्यय अलग। मूल्य ७५ पैसे।

श्री राष्ट्रालोक

राष्ट्रभाषानुवाद–सहित

राष्ट्रवादी ही आर्य हैं। आर्य ही शान्ति की स्थापन
सकते हैं।

भारत भारतीयों का है।

स्वातन्त्र्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है
पिता है, माता है और आचार्य है। हम सदा
हमारा राष्ट्र हमें भोग और मोक्ष दोनों देता है

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eG

हम सच्चे राष्ट्रिय हैं ।

अभारतीय भारत के अतिथि हो सकते हैं, राष्ट्रिय नहीं । हम संक्रांति का सदा आदर करते हैं । हमें ऐसी शान्ति नहीं चाहिये जो राष्ट्र को परतन्त्र बनाये ।

राष्ट्रिय राष्ट्र के पुत्र होते हैं, पति नहीं

भारतीय अपने आप को हिन्दू मानने में गौरव का अनुभव करते हैं । भारतीय आदर्श के विपरीत क्रान्ति किक्रान्ति है संक्रान्ति नहीं । यदि आप इन भावों से स्नेह करते हैं तो "...रीराष्ट्रालोक" अवश्य पढ़िये ।

...ष्ट्रालोक परम पवित्र भारतीय आदर्श का एक जीवन शास्त्र है

... का आदर कर रहे हैं । जनता हाथों हाथ ...प भी आज ही मँगाइये ।

मूल्य १) रु० मार्ग-व्यय अलग ।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri

॥ श्रीः ॥

श्रीमदमृतग्रन्थमाला के सात पुष्प

१. श्री महाऽनुभवशक्तिस्तवः —संस्कृत तथा हिन्दी व्याख्या सहित
मूल्य ५० पैसे ।

२. श्रीपरशुरामस्तोत्रम् —राष्ट्रभाषानुवाद सहित सचित्र चतुर्थ संस्करण अमूल्य ।

३. श्रीश्रीविंशतिकाशास्त्रम् —दो संस्कृत व्याख्याओं तथा एक हिन्दी व्याख्या के साथ
मूल्य ४) रु. ७५ पैसे ।

४. श्रीसप्तपदीहृदयम् —संस्कृत, हिन्दी, इंगलिश रूपान्तरों के साथ मूल्य १) रु०

५. श्रीसञ्जीवनीदर्शनम् —हिन्दी भाषान्तर सहित
मूल्य १) रु० ।

६. श्रीसंक्रान्तिपञ्चदशी —राष्ट्रभाषा गद्यपद्यानुवाद सहित
मूल्य १) रु० ।

७. श्रीसिद्धमहामन्त्रस्वरूपिणी —श्री परशिव प्रार्थना अमूल्य ।

श्रीग्रन्थमाला के दो पुष्प

१. श्रीपञ्चस्तवी —प्रथमस्तव संस्कृत व्याख्या तथा [illegible] भाषान्तर के साथ मूल्य ७५ [illegible]

२. श्रीललितासहस्रं काव्यम् —हिन्दी भाषानुवाद के साथ [illegible]
मूल्य [illegible]

श्रीमदानन्दवनप्रसूनमाला के [illegible]

१. श्रीसिद्धमहारहस्यम्

२. श्री मदमृतसूक्तिपंचाशिका

श्री पं० बलजिन्नाथ शास्त्री-
M. A. Phd. विरचित
संस्कृत व्याख्या सहित

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by e[illegible]

॥ श्रीः ॥

श्रीसिद्धमहारहस्यम्

श्रीमदानन्दवनप्रसूनमालाका यह एक अत्यन्त सुगन्धित प्रथम दिव्य पुष्प है। "आधिदैविक जगत् के लिये यह एक अमूल्य उपहार है," ऐसी विशिष्ट विद्वानों की सम्मति है। दैवी उन्नति के अभिलाषी इसको पढ़कर लाभ उठावें।

अन्य ग्रन्थ

१. श्रीराष्ट्रालोकः	मुद्रित तृतीय संस्करण मू० १)
२. श्रीआत्मविलास	द्वितीय संस्करण प्रेस में
३. श्रीत्रिगुणेश्वर-शिवस्तोत्रम्	मुद्रित
श्रीसूक्तिलहरी	,,
स्वाध्यायमहिम्न स्तोत्र	,,
वधाटीचतुष्ट्यम्	,,
ादनम्	,,
	,,
स्तोत्र	,,

ङ्कर आर्ट प्रिन्टर्स, त्रिपोलिया जयपुर।

CC-0. Sri Radha Krishna Samsthan, Delhi. Digitized by eGangotri